RNI Regn.No.- 54447/78 स्थापित: 1978 Postal Reg. No. UA/NTL- 08/ 2021-23

पिघलता हिमालय

वर्ष 38 अंक 49 हल्द्वानी सम्वत् 2080 सोमवार 15 मई 2023 एक प्रति 5 रु., वार्षिक-200 रु. आजीवन 2000 रु.

संस्थापक- स्व.आनन्द बल्लभ उप्रेती
स्व.दुर्गा सिंह मर्तोलिय,
स्व.श्रीमती कमला उप्रेती

editorpighaltahimalay@gmail.com
Website-
www.pighaltahimalay.com

सम्पादक : श्रीमती गीता उप्रेती
संरक्षक : फली सिंह दत्ताल
मंगल सिंह मर्तोलिया

सरकारी जमीनों से अतिक्रमण हटाने का अभियान

कार्यालय प्रतिनिधि

इन दिनों उत्तराखण्ड में सरकारी जमीनों से अतिक्रमण हटाने का अभियान जोर से चल रहा है। वन भूमि के अलावा अन्य सरकारी जमीनों पर भी यह अभियान कितना प्रतिशत सफल होगा यह तो आने वाले दिनों में पता चल जायेगा लेकिन अभी वन भूमि में जगह जगह बनाई गई मजारें निशाने पर हैं। हरिद्वार सहित तराई क्षेत्र में कई जगह वन भूमि में अभियान का जोर दिखाई दे रहा है। इसके अलावा सरकारी भूमि पर हुए अतिक्रमण हटाने के लिये प्रशासन जुट चुका है।

सीएम द्वारा सख्त निर्देश देने के बाद धर्म स्थल के नाम पर हुए अतिक्रमणों को हटाने का तानाबाना बुना जा चुका है। सीएम ने फिर से दोहराया है कि जनसंख्या असन्तुलन और लैंड जिहाद किसी हाल में बर्दाश्त नहीं किया जायेगा। अतिक्रमण हटाने के लिये बनाये गये दस्तों ने हरिद्वार में अतिक्रमण हटाने के बाद खटीमा, सितारगंज, किच्छा क्षेत्र में दर्जनभर से अधिक अवैध मजारों को हटाया गया। मजार के नाम पर केवल ढांचे बनाकर शहेष्ज्ञ अतिक्रमण किया गया था। किच्छा में गोठा जंगल के सिसय्या बीट में बनाए गए मजारों के

प्रतीकात्मक ढांचों को टीम ने ध्वस्त किया। खटीमा के प्रतापपुर नम्बर 2 गाँव में सरकारी भूमि पर बनी अवैध मजार को भी मशीन से ध्वस्त किया। इसके अलावा बाजार से भी अतिक्रमण हटाने का अभियान चलाया जा रहा है। जसपुर में पुलिस प्रशासन ने मुख्य मार्गों में जगह-जगह किये गये अतिक्रमण को हटाया। खटीमा शहर के प्रमुख बाजारों से अतिक्रमण हटाओ अभियान जारी है। तहसील रोड, पोस्ट ऑफिस रोड से लेकर सितारगंज रोड तक सड़क तक फैले सामान को नगर पालिका व पुलिस की संयुक्त टीम ने हटवाया है। बताते चलें कि खटीमा बाजार को बचाते हुए चकरपुर, बनबसा, टनकपुर, चम्पावत के लिये बाईपास सड़क भी बन चुकी है लेकिन सड़क किनारे अतिक्रमण करने वाले नहीं मान रहे हैं। काफी वाहन बाईपास से जाने लगे हैं लेकिन अतिक्रमण के कारण अभी भी स्थिति ठीक नहीं है।

न नौ मन तेल होगा और न राधा नाचेगी

केशव भट्ट

अटल बिहारी बाजपेयी के सिर्फ 13 दिनी प्रधानमंत्रित्व काल में अन्डरवर्ल्ड डॉन दाऊद इब्राहीम के साथ कथित सम्बन्धों के कारण बृजभूषण शरण सिंह टाडा के तहत तिहाड़ जेल में बन्द था। बाजपेई ने प्रधानमंत्री बनते ही बृजभूषण को पत्र लिखकर ढांढस बंधाते हुए उसकी तुलना सावरकर से तक कर डाली। यानी बाजपेई की दृष्टि में सावरकर और बृजभूषण दोनों बराबर थे।

उसी चक्कर में बृजभूषण का टिकट कट गया तो भाजपा ने किसी अन्य उम्मीदवार को मैदान में उतारने की बजाय उसकी पत्नी केतकी देवी सिंह को ही गोंडा से टिकट देकर चुनाव जितवा दिया।

अटल बिहारी बाजपेयी जब 1998-99 में दोबारा प्रधानमंत्री बने तो उनका बृजभूषण प्रेम जागा और उसे सीबीआइ से क्लीन चिट मिलने पर वह आजाद हो गया। अटल बिहारी की हौसला अफजाई के बाद बृजभूषण का कद लगातार बढ़ता गया और आरोप पीछे छूटते गये।

भाजपा ने जब 1991 में बृजभूषण सिंह को लोकसभा टिकट दिया तब इसके खिलाफ 34 आपराधिक मामले दर्ज थे। भाजपा ने इस गुण्डे को गोंडा का रॉबिनहुड कहकर बचाव किया और वह भारी मतों से चुनाव जीत गया।

8 जनवरी, 1957 को गोंडा (उत्तर प्रदेश) में जन्मा बृजभूषण शरण सिंह प्रदेश का सबसे बड़ा बाहुबली नेता माना जाता है। उसकी दुस्साहसी गुण्डई ऐसी कि छात्र राजनीति के दौरान ही कालेज के किसी मामले में हैंडग्रेनेड चला दिया था, जिसके बाद उसका नाम उछला और फिर वह राजनीति में सक्रिय होता गया। पुलिस अधीक्षक आफिस में एसपी पर ही पिस्टल तान दी। राजनीति में पकड़ ऐसी कि लगातार 6 बार से सांसद का चुनाव जीत रहा है। साथ ही कारोबार ऐसा कि 50 से ज्यादा स्कूल-कालेज का मालिक बन बैठा है। रसूख ऐसा कि पार्टी लाइन से अलग भी बयानबाजी करता रहता है।

उसने अपने दम पर बेटे करण भूषण सिंह को भारतीय कुश्ती महासंघ का उपाध्यक्ष, दूसरे बेटे प्रतीक भूषण सिंह को भाजपा विधायक, बेटे के साले आदित्य प्रताप सिंह को कुश्ती महासंघ का संयुक्त सचिव और दामाद विशाल सिंह को बिहार

शेष पृष्ठ 2 पर

चार धाम यात्रा :

ट्रैफिक जाम, कूड़ा और स्वास्थ्य प्रबन्धन की है बड़ी चुनौती

देवकृष्ण थपलियाल

उत्तराखण्ड इन दिनों चारधाम यात्रा से गुलजार है। अप्रैल माह के शनिवार 22 तारीख को सबसे पहले गंगोत्री-यमुनोत्री धामों के कपाट खुले। इस दिन पहले सुबह 8:30 गंगा की डोली भैरवगढ़ से गंगोत्री धाम पहुँची तथा दोपहर 12:35 बजे स्थानीय रीति-रिवाज और वैदिक मंत्रोचार के साथ गंगोत्री धाम के कपाट आम श्रद्वालुओं के लिए खोल दिए गये। यमुना की डोली अपनें शीतकालीन प्रवास स्थल खरसाली से 9 बजे यमुनोत्री धाम लिए रवाना हुई तथा 12:48 अभिजीत मुहूर्त में यमुनोत्री माँ के कपाट खोले दिए गये ।

हिमालय में स्थित 11 वें ज्योतिर्लिंग भगवान केदारनाथ का दरबार 25 अप्रैल को सुबह 6:20 पर लगभग 18,500 भक्तों की उपस्थिति में खुल गया। सर्द मौसम की ठण्डी हवाओं को पीछे छोड़ तीर्थयात्रियों नें अपने ईष्ट के दर्शन किये। राज्य सरकार नें तीर्थयात्रियों के स्वागत में हैलीकाप्टर से फूलों की वर्षा की,तथा स्वयं बाबा के दरबार केदारधाम को 45 कुन्तल फूलों से सजाया गया था। 27 अप्रैल को करीब पन्द्रह हजार श्रद्वालुओं की उपस्थिति में सूबह 7:10 मिनट पर श्री बदरीनाथ धाम के भी कपाट खोल दिए गए। बदरी विशाल के गगनभेदी नारों के साथ स्थानीय बामणी और माणा की महिलाओं नें पारम्परिक वेश-भूषा में स्थानीय झूमैलो नृत्य किया, सेना के गढ़वाल स्काउट, आईटीबीपी के जवानों के बैंड से भक्ति स्वर लहरियों ने वातावरण को भक्तिमय बनाने में कोई कमीं नहीं छोड़ी। सिंहद्वार पर बद्रीनाथ-केदारनाथ मन्दिर समिति के वेद-वेदान्त के आचार्यों व छात्रों नें वेद पाठ और विष्णु सहस्रनाम का सस्वर पाठ किया। वहीं राज्य सरकार के निर्देश पर श्रद्वालुओं पर हैलीकाप्टर से पुष्प वर्षा की गई जिससे यात्रीगण खासे प्रसन्न दिखे।

चारों धामों के कपाट विधिवत खुलनें के बाद तीर्थयात्रियों व श्रद्धालुओं की आवाजाही लगातार बढ़ रही है। इससे पहले शासन-प्रशासन यात्रा इन्तजामों को लेकर काफी संजीदा दिखा, राज्य के मुखिया पुष्कर सिंह धामी, पर्यटन मंत्री सतपाल महाराज, मुख्य सचिव सुखवीर सिंह सन्धु तथा गढ़वाल आयुक्त सुशील कुमार इन इन्तजामों की लगातार समीक्षा बैठक कर रहें हैं।

विगत दो सालों के कोरोना महामारी व 2013 की आपदा का कुहॉसा अभी छटा नहीं है, चार धाम यात्रा पर इसका असर सफ दिख रहा है, बदलते दौर में अनुमान था कि यात्रा बढ़ेगी, और यात्रा में शिरकत करने वाले यात्रियों की संख्या में भी खासा इजाफा होगा परन्तु ऐसा नही हुआ। उधर सरकार का भी एक करोड़ यात्रियों को लाने का संकल्प था, इसके विपरीत हर साल यह ऑकड़ा 18 से 20 लाख तक सिमट जाता है। उत्तराखण्ड पर प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की नज़र के बावजूद ये स्थिति है?

चार धाम के महत्व को सरकार खूब समझती है परन्तु उसका वास्तविक लाभ लेने में अभी काफी पीछे है। यात्रा से करीब 60 से अधिक छोटे-बड़े शहर सीधे तौर पर कारोबार से जुड़ते हैं। यात्रा से कारोबार मे 80 फीसदी की बड़ी वृद्धि होने अनुमान है। होटल, ट्रेवल, कारोबार के अलावा कम्बल, गर्म कपडों, स्थानीय उत्पादों के साथ पूजा-पाठ की सामग्री, असमय बारीश से बचने के लिए बरसाती, और आस्था के पथ पर पैदल चलनें के लिए लाठी के साथ ही जरूरी सामान बेचनें वालों के लिए चार धाम यात्र उम्मीदों को लेकर आतीं हैं। विगत यात्राओं की तरह इस यात्रा में भी बेहतर कारोबार की उम्मीद की जा रही है, यात्रा के प्रमुख पड़ावों पर बाजार सज गये हैं। रूद्रप्रयाग जिले में फड़ कारोबार लाखों में होता है। वैसे भी सामान्य दिनों तुलना में यात्रा रूट के सभी बाजार व दुकानें 30 से 50 फीसदी अधिक कारोबार करते हैं। गुप्तकाशी, फाटा, सीतापूर, सोनप्रयाग, गौरीकुंड और स्वयं केदारनाथ में यात्राकाल कारोबार के लिहाज से गुलजार रहता है। स्थानीय ल्ल, चाट, नींबू, खीरा,आदि भी नये कारोबार के रूप में तेजी से बढ़ रहे हैं। उद्यान एवं खाद्य प्रंसस्करण विभाग की ओर से चार धाम यात्रा के मुख्य पड़ाव श्रीनगर के परम्परागत उत्पादों का विपणन शुरू कर दिया गया है। प्रदेशभर में 12 विपणन केन्द्र खोले जा रहें हैं। जिससे लगभग पूरा प्रदेश जुड़ेगा खासकर ग्रामीण क्षेत्रों की जनता के दिन भी बहुरेंगें। यात्रा रूटों पर युवाओं नें अनेक आधुनिक सुविधाओं से युक्त होटल, रेस्टोरेंट और दूसरे व्यावसायिक प्रतिष्ठान खोले हैं, जिससे उनकी आर्थिक स्थिति में सुधार के साथ स्थानीय युवाओं को रोजगार से जुड़ने के अनेक सुअवसर प्राप्त हो रहे हैं। युवाओं की इस खास व्यावसायिक रूचि के कारण सरकार ओर प्रदेश को अर्थिक समृद्धि के साथ-साथ बेरोजगारी का दंश भी समाप्त हो रहा है। इसलिए चार धाम यात्रा के महत्व को समझते हुए यात्रियों को जो जरूरी सुविधाऐं मिलनीं चाहिए थीं उसका नितान्त अभाव है।

अच्छी स्वास्थ्य सुविधाओं को लेकर भी कई दावे किए जाते हैं,लेकिन पहाड़ में वैसे ही पहले से न अच्छे हॉस्पिटल हैं, नही डॉक्टर फिर यात्राकाल में तो इसका अभाव साफ खटकता है। चारों धामों की स्थिति विषम भौगोलिक होने के कारण वहाँ कई स्वास्थ्य सम्बन्धी

शेष पृष्ठ 2 पर

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

पिघलता हिमालय

आजकल के डिग्री कालेजों का सच जान लो

वर्तमान में युवा उच्चशिक्षा चाहता भी है या नहीं? यह समझने की बात है। नई शिक्षा नीति सहित उच्चशिक्षा में दिखावे के कई तौर-तरीके दिख रहे हैं लेकिन सच्चाई यह निकल कर आ रही है कि इण्टर के बाद अधिकांश युवा अपनी दिशा बदल रहे हैं। नियमित पढ़ाई का विकल्प मुक्त विश्वविद्यालय में संख्या बढ़ी है। ऐसे में जगह-जगह खोल दिये गये महाविद्यालयों का क्या महत्व है? क्या यह सिर्फ उन बालक-बालिकाओं के लिये खुले हैं जिन्हें आकर कुछ विषयों को फार्म में भरकर परीक्षा देनी है।

उत्तराखण्ड के महाविद्यालयों की जाँच करने पर पता चल जायेगा कि कितना प्रतिशत युवा नियमित हैं और कितनी पढ़ाई हो रही है। रिकार्ड अलबत्ता पूर्ण होंगे। पहाड़ों में डिग्री कालेज खोलने के आन्दोलन होते हैं और कई जगह खुल भी चुके हैं लेकिन उपस्थिति का क्या होगा? नारायण नगर महाविद्यालय और मुवानी महाविद्यालय के प्राचार्य ने छात्र-छात्राओं के न आने पर घर-घर पोस्टकार्ड भेजे हैं। नियमानुसार छात्र-छात्राओं की उपस्थिति ७५ प्रतिशत जरूरी है। सोचनीय है कि उच्चशिक्षा की ओर बढ़ रहे कदमों को घर से बुलाकर उपस्थिति लगवानी पड़ रही है। इन महाविद्यालयों के प्राचार्यों ने अच्छी पहल की है लेकिन अन्य कालेजों में क्या? हाताल तो अन्य जगह भी बेहतर नहीं दिखाई दे रहे। देखने में आ रहा है कि प्रवेश के समय नये विद्यार्थियों की चहल-पहल के बीच छात्र राजनीति करने वाले सक्रिय होकर कालेजों में भीड़ बनाने का काम कर जाते हैं। इसके बाद पूरे सत्र में छात्र-छात्राएं छंटने लगते हैं और विज्ञान विषय के पढ़ने वाले प्रयोगात्मक विषय के कारण दिखाई देते हैं लेकिन कला और वाणिज्य वर्ग की संख्या गिरती चली जाती है। साथ ही यह तो और भी दयनीय स्थिति है कि कुछ ऐसे चेहरे मंडराते रहते हैं जिन्हें कालेज प्रशासन रोक नहीं पाता है। इनका काम युवाओं को बहलाना रहता है। स्थानीय दादागिरी का दम्भ इन्हें होता है और इनकी संगत माहौल को अशान्त करने वाली होती है। कहने को तो 'कालेज प्रशासन' भारी शब्द लग रहा है लेकिन व्यवहार में शिक्षक वर्ग क्या कर सकता है। कालेजों की बिगड़ती स्थिति से शासन भी परिचित है, यही कारण है कि वायोमेट्रिक उपस्थिति दर्ज करने पर जोर दिया जा रहा है। आने वाले समय में इसमें और भी सख्ती होगी।

इन सबके बावजूद यह तो तय है कि अब युवाओं को उच्चशिक्षा के वर्तमान तरीके से रिझाया नहीं जा सकता है। नामी विश्वविद्यालयों और कालेजों में भले ही प्रवेश लेने की होड़ मची हो लेकिन जगह-जगह बनाए जा रहे कालेज भवनों का उपयोग तब तक नहीं हो सकता है जब तक कि इनमें पूरी व्यवस्था- स्टाफ, विषय, प्रयोगशाला न हो जाए। साथ ही इसमें प्रवेश के समय से ही अनुशासन हो और वाह्य अनावश्यक जनों का प्रवेश वर्जित होना चाहिये।

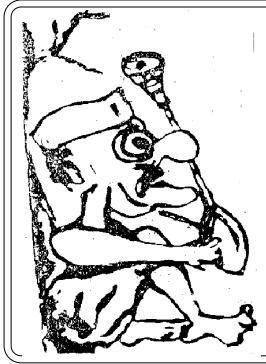

फसक

दाज्यू, मन की बात तो बहुत जरूरी ठैरी

जिसके मन की न करो वही पिलपिला रहा है बल

दाज्यू, इस बार रविवार को मोदी ज्यू ने मन की बात का सौवां एपीसोट क्या किया, हमारा घन दा उचेड़ने को आ रहा है। कह रहा था- 'ले दे कर एक सण्डे मिलता है उसमें भी इनके मन की सुनो। हमारी कोई नहीं सुन रहा है।' दाज्यू, घनदा को क्या पता मोदी ज्यू का विजन ठैरा। हमने भी दरी-चटाई बिछाकर मन की बात सुनी। हमारे साथ सुनने वाले और भी थे लेकिन अब सब अपने-अपने मन की कर रहे हैं। किस-किस को रोकें।

ऋषिकेश में प्रदेश के वित्त मंत्री प्रेमचन्द अग्रवाल और भाजपा कार्यकर्ता में बीचसड़क मारपीट का लफड़ा निपट नहीं रहा है। मंत्री अपने मन की बात कह रहे हैं और कार्यकर्ता अपने मन की। सीएम भी इस तमाशे को देख हैरान हो गये और मंत्री को तलब करना पड़ा। मंत्री का रौब और विपक्ष का हंगामा भी अपनी बात करता रहा। इसके बाद मंत्री, उनके पीआरओ और गनर के खिलाफ मामला दर्ज कर जाँच की बात कही गई।

हल्द्वानी में पत्नी की मन की सुन ड्यूटी कर रहे सफाईकर्मियों पर गाज गिर रही है। नबर निगम अधिकारियों को पता चल गया है कि सफाई कर्मियों की जगह दूसरे या उनके पति काम कर रहे हैं। केदारनाथ और बद्रीनाथ मन्दिर में कई स्थानों पर दान के लिये क्यूआर कोड के लिये बोर्ड लगाने पर हंगामा मचा हुआ है। दाज्यू, जो धन्धा चल निकले उसके लिये लम्बी तैयारी हो जाने वाली हुई। समेटने के लिये कई हैं। अल्मोड़ा जिले के बिन्ता कस्बे में चोरों ने जिला सहकारी बैंक में चोरी का प्रयास किया। नकाबपोशों ने सीसीटीवी कैमरे के तार काट डाले। दाज्यू, रानीखेत उपमण्डल में चोरों ने रफ्तार पकड़ ली है बल। रानीखेत के एचडीएफसी बैंक स्थित एटीएम में तोड़फोड़ पहले हो चुकी है।

रामनगर में रुपयों के लेनदेन के चक्कर में बजरंग दल के कार्यकर्ता अरविन्द उर्फ पप्पी की हत्या हो गई। दाज्यू, रामनगर में खनन-चकारी का खेल बहुत हो रहा है। जिसके मन की न करो वही पिलपिला रहा है बल। देहरादून में यूनियन बैंक के सहायक प्रबन्धक ने ऑनलाइन कैसीनों में अपनी जमा पूंजी लुटाने के बाद बैंक की एक महिला खाताधारक के 42 लाख रुपये का गबन कर कैसीनो में उड़ा दिये। पता नहीं प्रबन्धक के मन में क्या आई होगी? उनके मन की वही जाने। प्रदेश के विश्वविद्यालयों और डिग्री कालेजों में एक जुलाई से शुरु होने वाले नए शिक्षा सत्र में ऑनलाइन कक्षाएं भी चलाई जाएंगी। दाज्यू, पहले ही चौपट हो चुका है.....रही-बची.....ऑनलाइन। वैसे ठीक ही ठैरा, सबकुछ ऑनलाइन होने लगा है। स्कूल-कालेजों का ढर्रा भी बदल जाएगा। -तुम्हारा भुली झकरुवा

न नौ मन....

प्रथम पृष्ठ का शेष

कुश्ती संघ का अध्यक्ष बनवा दिया। जबकि खुद 11 साल से भारतीय कुश्ती महासंघ के अध्यक्ष के पद पर काबिज है। बृजभूषण शरण शुरुआती दिनों में मोटर साइकिल चोरों और चौथ वसूली गैंग का सदस्य था। फिर शराब माफियाओं से सम्बम्ध, छात्र राजनीति में एंट्री और फिर दाऊद इब्राहीम से सम्बन्ध तक का सफर रहा। विश्व हिन्दू परिषद अध्यक्ष अशोक सिंघल का भी बेहद करीबी था लेकिन उस दौर में रासस से सम्बन्ध ठीक नहीं थे।

फिलवक्त बृजभूषण पर कई दर्जन केस दर्ज हैं। जबकि बाबरी मस्जिद विध्वंस और दाऊद इब्राहीम से सम्बन्धों पर क्लीन चिट मिल गयी। बाकी अन्य चल ही रहे हैं। इस बार पाला पहलवानों से पड़ा है। बचाव गैंग बृजभूषण को देवता और आरोप लगाने वाले खिलाड़ियों को देशद्रोही बनाने की मुहिम जारी है। बृजभूषण शरण सिंह कहता है कि यदि मोदी, अमित शाह या जेपी. नड्डा भारतीय कुश्ती महासंघ के अधयक्ष पद से इस्तीफा देने के लिए कहेंगे तभी मैं इस्तीफा दूंगा। अब, जैसा कि दिखाई दे रहा है न नौ मन तेल होगा और न राधा नाचेगीय क्योंकि मोदी-शाह ने भाजपा को पूरी तरह से गुंडे-मवालियों और अपराधियों की शरणस्थली बना दिया है।

चारधाम यात्रा....

प्रथम पृष्ठ का शेष

परेशानियाँ होंना स्वाभाविक है। स्वास्थ्य सुविधाओं के अभाव में प्रतिदिन एक-दो लोगों को जान गवानी पड़ती है। केदारनाथ धाम में इस बार स्थाई भवन न मिल पाने के कारण सिक्स सिग्माहाई एल्टीट्यूड मेडिकल सर्विसेज भी उपलब्ध नहीं हो पायेगी जिससे और परेशानी बढ़ जायेगी।

चारों धामों में रूकने की सीमित व्यवस्था को देखते हुए यात्रियों की एक लिमिट अथवा एक संख्या का निर्धारण किया गया था, जिससे यात्रियों को आराम से दर्शन, पूजा-पाठ व रात्री विश्राम मिल सके, खासकर केदारनाथ व यमुनोत्री में संसाधन अत्यन्त सीमित हैं, बारिश और बर्फबारी को देखते हुए ठण्ड से यात्रियों के साथ अनहोनी होनी लाजिमी है। बद्रीनाथ में जोशीमठ, पीपलकोटी, औली में कुल 18,000 बैड की क्षमता है, लिचौंली से केदारनाथ तक 8-10 हजार लोगों के लिए आराम करनें सुविधा मिल सकेगी, जबकि आज हालात ये हैं कि 18 से 20,000 यात्रियों की संख्या प्रतिदिन के हिसाब से दर्शन कर रही है, जिससे यात्री न तो ठीक ढग से दर्शन कर पा रहे हैं, न तो रात्री विश्राम की समुचित व्यवस्था हो पा रही है, यात्रा शुरू होते ही सरकार के दावे और वादे दोनों झूठे साबित हो रहे हैं, यात्रियों के अन्सन्तोष और अव्यवस्था से देश-विदेश से आनें वाले लोगों पर भी इसका अच्छा सन्देश नहीं जा रहा है। यात्रियों को उपलब्ध संसाधनों के हिसाब से एक निश्चित संख्या में ही भेजा जाना चाहिए। 'ऑल वेदर रोड' का काम लगभग पूरा हो चुका है, ये अच्छी बात है, कि पहाड़ में अब पहले जैसी दुरूह व मुश्किल भरी सड़कें नहीं हैं, सड़कों के विस्तारीकरण से यात्रा काफी आसान हुई है परन्तु आम तौर पर पहाड़ी इलाकों में बरसात की अनियमित स्थिति से सड़कों का खराब होना आम बात है, चट्टानों और पहाड़ों को तोड़-खोदकर बनाई सड़कों के टूटने/खिसकने ये आशंका होती हैं। सरकार नें इस बार ऐसी स्थिति से निपटने के लिए प्रत्येक जिलाधिकारी के खाते में दो करोड़ रुपये का बजट दिया है, मुश्किल वक्त के समय स्थिति से निपटने में सहयोग करेगा।ऑल वेदर रोड अभी कई जगहों पर निर्माणाधीन है, जिस कारण ट्रैफिक जाम व दूसरी स्थितियों का सामना करना पडता है। कई स्थानों पर अभी भी डेंजर जोंन बनें हुए हैं, केदारनाथ हाइवे पर नैल, खाट, फाटा, व्यूंग, बडासू और मुनकटिया आदि स्थानों पर डेंजर जोंन है, केदारनाथ के लिए 'ऑल वेदर रोड' में कूड़े से बाईपास का निर्माण भी अभी पूरा नहीं हुआ, कर्णप्रयाग मे बद्रीनाथ हाईवे का करीब 500 मी. से अधिक हिस्से का चौड़ीकरण का काम रुका हुआ है। गांधीनगर के पास बीते कई वर्षों से सडक धंस गई थी। यहाँ एक तरफ सड़क तो ठीक कर दीं गईं, लेकिन दूसरी ओर सड़क के संकरी होने के कारण जाम की स्थिति लगातार बनीं रहती है। हरिद्वार-ऋषिकेश में चार धाम यात्रा का स्वागत ट्रैफिक जाम के साथ होता है। इन दोंनों प्रमुख शहरों के बीच 12 स्थानों पर ऐसे प्वाइंट हैं, जहाँ पर जाम लगना निश्चित है। हरिद्वार से नेपाली फार्म तक पहुँचनें के बाद ऋषिकेश को पार कर तपोवन तक की दूरी तय करना बड़ी चुनौती से कम नहीं है। यमुनोत्री हाईवे पर पालीगाढ़ से जानकीचट्टी तक 27 किमी केदायरे में हाईवे काफी बेहद संकरा है, वही सड़क की स्थिति भी दयनीय है। जगह-जगह गडढे होने के साथ ही सडक के किनारे मिट्टी के ढेर लगे हैं। केदारनाथ हाईवे पर ऑल वेदर का काम अभी गुप्तकाशी से आगे सोंनप्रयाग ओर गौरीकुण्ड तक पूरा नहीं हो पाया, खाट गाँव, मैखण्ड, फाटा, सीतापुर, सोनप्रयाग, गौरीकुण्ड में तंग सड़क जाम की बड़ी वजह बन सकती है। सड़कों पर जाम लगने की स्थिति के पीछे पार्किंग व्यवस्था का अभाव है, यात्रा रूट से लगे शहर पहले ही ट्रैफिक का दबाव झेल रहे हैं, फिर यात्रा शुरू होते ही दिक्कतें और बढ़ जाती हैं।

हिमालय क्षेत्र से निकलने वाली पवित्र नदियों और समृद्ध नैसर्गिक सौन्दर्य को बनाए रखना बड़ा चुनौती का काम है, जिस पर सरकार का ध्यान नहीं जाता है। गंगा ओर उसकी सहायक नदियों में साफ करनें के नाम पर नमामी गंगें जैसी अनेक योजनाओं पर करोड़ों रुपये बहाए जा रहे हैं। तीर्थयात्रियों द्वारा आयातित कूड़े का योगदान जुडने से नदियां और यहाँ की धरती और दूषित होती चली जा रही है, गंगा अपने उदगम स्थल से दूषित की जा रही है। अपने शीतकालीन प्रवास के बाद माँ गंगा की डोली जब मुखवा गाँव से गंगोत्री धाम के लिए प्रस्थान करती है, तो मुखवा और आसपास के गाँवों के निवासी गंगा को एक बेटी तथा माँ के तौर विदा करते हैं। इतना भावनात्मक व जीवन्त रिश्ता होने के बावजूद भी गंगा अपनें मायके से ही मैली होती जा रही है। मुखवा और धरालीं में भी कचरा सीधे नदी में डाला जा रहा है। यहाँ शौचालय भी गंगातट पर बनाया गया है। गंगोत्री से लेकर चिन्यालीसौड़ तक के 135 किमी. के सफर में गंगा किनारे बसे सभी शहर और कस्बों का कचरा सीधे गंगा में डाल दिया जाता है। ये अच्छी बात है कि सरकार नें कुछ प्रयास किये हैं, गंगोत्री-यमुनोत्री के लिए जिला प्रज्ञासन नें रिसाकिल कम्पनी के साथ-साथ पाँच साल का अनुबन्ध कर दिया है। इसमें प्लास्टिक मुक्त बनाने का लक्ष्य रखा गया है।

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

चिन्ता

कहीं खत्म न हो जाएं बुग्याल

डॉ.हरीश चन्द्र अन्डोला

उत्तराखण्ड के हिमालय से लगे बुग्याल प्रकृति का अमूल्य खजाना हैं। प्राकृतिक सौन्दर्य के साथ-साथ ये औषधियों का भण्डार भी हैं लेकिन विडम्बना ही है कि प्रकृत। उत्तराखण्ड के हिमालय से लगे बुग्याल प्रकृति का अमूल्य खजाना हैं। प्राकृतिक सौन्दर्य के साथ-साथ ये औषधियों का भण्डार भी हैं लेकिन विडम्बना ही है कि प्रकृति उत्तराखण्ड के उत्तरकाशी जिले में बर्फ की चादर ओढ़े दयारा बुग्याल (मखमली घास का मैदान) जन्नत से कम नहीं है। बड़ी संख्या में पर्यटक इसका दीदार करने पहुँच रहे हैं। दयारा बुग्याल 30 वर्ग किमी में फैला हुआ है। इसमें इन दिनों बर्फ की चादर बिछी हुई है। बर्फ की चादर ओढ़े उत्तरकाशी जिले का दयारा बुग्याल स्कीइंग व साहसिक पर्यटन के लिए जाना जाता है। 30 वर्ग किमी में फैला यह बुग्याल अप्रैल माह में भी बर्फ की चादर ओढ़े है और पर्यटकों को खूब भा रहा है। इससे बुग्याल की हल्की ढलानों पर बर्फ में दूर तक सैर और स्कीइंग करने के लिए काफी अच्छी स्थितियां हैं। यहाँ पहुँचने के बाद पर्यटकों को जन्नत का अहसास होता है और पर्यटक सुन्दर वादियों का दीदार करते हैं। उत्तराखण्ड राज्य के उत्तरकाशी जिले में स्थित दयारा बुग्याल समुद्र सतह से 3048 मीटर की ऊँचाई पर स्थित है।

उत्तरकाशी गंगोत्री मार्ग पर स्थित भटवाड़ी नामक स्थान से इस खूबसूरत घास के मैदान के लिए रास्ता जाता है। दयारा बुग्याल देशी-विदेशी पर्यटकों के आकर्षण का प्रमुख केन्द्र है। हर साल यहाँ बड़ी संख्या में पर्यटक पहुँचते हैं। 30 वर्ग किलोमीटर दायरे में फैले मखमली घास के दयारा बुग्याल में बरसात के बाद रंग-बिरंगे फूलों की छठा देखने लायक होती है. वहीं इस समय बर्फ इसकी खूबसूरती में चार चाँद लगा रही है। उत्तरकाशी जिला मुख्यालय से 40-45 किमी सड़क दूरी पर स्थित रैथल एवं बार्सू गाँव से करीब 8 किमी पैदल ट्रैकिंग कर पर्यटक यहाँ पहुँचते हैं। यहाँ से बड़े-बड़े पर्वत- माउण्ट बन्दरपूंछ, माउण्ट ब्लैक पीक, माउण्ट जोंली, माउंट श्रीकान्त, माउण्ट द्रौपदी का डण्डा और भी बहुत कुछ साफ दिखते हैं।

दयारा बुग्याल में भाद्रपद संक्रान्ति के दिन ग्रामीण दूध- मक्खन की अनूठी होली वाला अंढूड़ी पर्व मनाते हैं। पूरे साल इस बुग्याल का दीदार करने पर्यटक पहुँचते हैं, जिनका ग्रामीण भी खूब स्वागत करते हैं। वहीं पर्यटकों से सरकार को अच्छा राजस्व भी प्राप्त होता है, जिसको लेकर पर्यटन विभाग भी इसके विकास के लिए लगातार कार्य कर रहा है। इस समय दयारा बुग्याल में शीतकालीन खेलों के लिए आदर्श स्थिति बनी हुई है। यहाँ दिसम्बर से लेकर मार्च के पहले पखवाड़े तक बर्फबारी जारी रहती है. इससे यहाँ बर्फ की मोटी चादर बिछ जाती है, जो अप्रैल के बाद ही पिघलती है। ऐसे में यहाँ दिसम्बर से अप्रैल तक शीतकालीन खेल और स्नो वॉक की भरपूर सम्भावनाएं हैं। इन दिनों भी दयारा के बेस कैंप बार्सू, रैथल व नटीण गाँव से दयार जाने वाले पर्यटक पहुँच रहे हैं। प्रदेश के छह जिलों में 80 से 82 बड़े बुग्याल हैं। इनमें टिहरी, रुद्रप्रयाग, चमोली, पिथौरागढ़, बागेश्वर और उत्तरकाशी में विख्यात बुग्याल हैं, लेकिन अब इन पर संकट मंडरा रहा है। कुछ स्थानों पर सड़क निर्माण के कार्य से बुग्याल प्रभावित हुए हैं। तो वहीं शिकार के लिए बुग्याल क्षेत्र में आग लगाई जाती है। जलवायु परिवर्तन के कारण बुग्यालों की तरु बढ़ती ट्री लाइन, ग्लेशियर क्षेत्र में अत्यधिक बारिश और बढ़ती पर्यटन गतिविधियों के कारण बुग्यालों की सेहत खराब हो रही है। हिमालयी क्षेत्र में स्थित बुग्यालों में मृदा कार्बन कम होने के साथ ही जड़ी-बूटियों को विदोहन भी बढ़ा है। सड़क निर्माण के मामलों ने भी इन्हें प्रभावित किया है। समय रहते इनके संरक्षण की दिशा में काम नहीं किया गया तो आने वाले समय में बुग्याल कल की बात हो जाएंगे बुग्यालों की संरक्षण की दिशा में वन विभाग के स्तर से लगातार प्रयास किए जा रहे हैं बुग्यालों की सेहत कई कारणों से बिगड़ रही है। क्लाइमेट चेंज, कम बर्फबारी और अधिक बारिश, लोगों की ओर से बड़े जानवरों को बुग्याल क्षेत्र में छोड़ा जाना, पर्यटन के चलते मानवीय हस्तक्षेप बढ़ना इत्यादि ऐसे कारण हैं, जो बुग्यालों की सेहत पर असर डाल रहे हैं खत्म न हो जाएं बुग्याल चमोली में विश्व प्रसिद्ध बुग्याल-घास के मैदान हैं। राज्य सरकार ने इनके संरक्षण और संरक्षण के लिए प्रभावी कदम नहीं उठाए हैं। बुग्यालों में फाइबर झोपड़ियों के निर्माण से क्षेत्र के पर्यावरण और पारिस्थितिकी को अपूरणीय क्षति हो रही है इन घास के मैदानों पर किसी भी प्रकार की शिविर गतिविधि की अनुमति नहीं दी जानी चाहिए। इन बुग्यालों में आने वाले पर्यटकों की संख्या भी सीमित होगी।

ज्योतिष की बातें - 126

15 मई 2023 को सूर्य शत्रुराशि वृषभ में प्रवेश करेगा। उस पर कोई शुभदृष्टि भी नहीं होगी और शुभ ग्रह से युति भी नहीं होगी। इस कारण सूर्य अत्यन्त निर्बल रहेगा फिर भी अगले एक माह सूर्य स्वास्थ्य, आत्मसम्मान, सफलता आदि अपने कारक विषयों में मीन, धनु, सिंह व कर्क राशियों के लिए सामान्य शुभफल प्रदान करेगा। अन्य राशि के जातकों को अभी प्रतीक्षा करनी चाहिए।

15 मई 2023 को बुध मेष राशि में मार्गी हो जाएगा। बुध यथावत अपना शुभाशुभ फल न्युनाधिक रूप से प्रदान करता रहेगा।

वटसावित्री व्रत- यह व्रत जेष्ठ कृष्णपक्ष चतुर्दशी विद्धा अमावस्या को मनाया जाता है लेकिन अमावस्या सूर्यास्त के पूर्व तीन मुहूर्त अवश्य रहनी चाहिए। तदनुसार शुक्रवार 19 मई को महिलाएँ अपने पति की दीर्घायु के लिए यह व्रत सम्पन्न करेंगी।

शनि जयन्ती- जेष्ठ कृष्ण अमावस्या को शनि जयन्ती मनाई जाती है। यह पर्व भी शुक्रवार 19 मई को किया जाएगा। जिनकी जन्मकुण्डली में शनि अशुभ है, शनि की साढ़ेसाती अथवा महादशा चल रही है उन्हें यह पर्व अवश्य मनाना चाहिए और श्री शन्यष्टोत्तर शतनाम स्तोत्रम् का पाठ करना चाहिए ।

शुभं भवतु !!

-ओंकार नाथ कोष्टा
ज्योतिर्विद् एवं आयुर्विद

सम्यक विचार- 17

गरीब पर न्याय प्रक्रिया का हथौड़ा

भारतीय न्यायालयों में लगभग 5 करोड़ से अधिक मुकदमे लम्बित हैं जिसमें 70 हजार उच्चतम न्यायालय में, 60 लाख उच्च न्यायालयों में और निचली अदालतों में 4.7 करोड़ मुकदमे लम्बित हैं। इसमें कोई कष्ट की बात नहीं है।

लेकिन कष्ट की बात तब होती है जब एक व्यक्ति 28 वर्ष की उम्र में गिरफ्तार हुआ और 58 वर्ष की उम्र में बाइज्जत बरी हुआ उसकी पूरी युवावस्था बिना अपराध के जेल में ही बीत गई। उस पर और उसके परिवार पर होने वाले इस भयंकर अत्याचार को कोई समझेगा क्या? दूसरा उदाहरण एक व्यक्ति पर किसी अपराध में मुकदमा शुरू हुआ और 30 साल तक मुकदमा चलता रहा। पूरी जिन्दगी मुकदमे का कष्ट, आर्थिक हानि व सजा होने का भय आदि को झेलता रहा। सुख पूर्वक चौन से जीवन भर सो नहीं पाया, घुट-घुट कर जिन्दगी जिया। तीसरा उदाहरण, कभी-कभी तो घटना होने के 30-40 साल बाद गिरफ्तारी होती है और मुकदमा शुरू होता है। यह भी न्यायिक प्रक्रिया की क्रूरता ही है ।

सबसे ज्यादा दुख की बात है कि हजारों लाखों ऐसे व्यक्ति जेलों में बन्द हैं जो गरीबी के कारण जमानत नहीं करवा सके अथवा जमानत मिल भी गई तो जमानत की प्रक्रिया पूरी नहीं करवा सके और पूरी जिन्दगी बिना किसी सजा के जेल में ही काट दी । यह बहुत ही दर्दनाक बात है उस सामान्य से व्यक्ति के लिए, उसके परिवार के लिए। क्या कभी कोई ऐसी सरकार आएगी जो इस न्याय प्रक्रिया के द्वारा गरीब आदमी पर हो रही क्रूरता को समाप्त कर सके ।

-सरल

डायरी के पन्ने

प्रसाद का गोला

एम.एस.सयाना

आज दिनांक 20.11.1985 के प्रात: एकाएक मुझे अपने जीवन के कुछ सुखद खट्टी-मीठी यादें आई और मैं काफी देर तक अपनी इन्हीं यादों में खो गया। जो दु:ख-सुख अपने जीवन में मैंने अपने पिता के देखे तथा मैंने और मेरे परिवार जनों ने झेला भी, मैं उसी उधेड़बुन में रह गया। इन्सास का जीवन भी कितना संघर्षमयी तथा गतिशील होता है।

जब से मैंने होश सम्भाला है, मुझेएक संस्मरण हमेशा याद आता है और मुझे अपने मन ही मन अपने उस भोलेपन पर हँसी आती है। माघ-पूस का महीना रहा हागा, चिल्कियाँ में हम लोग जाड़ों में रहते थे। एक दिन पिता जी किसी काम से गाँव गये थे, घर में माँ, भाई मेरी बहिन थी। उनके प्रोग्राम के मुताबिक उनको उसी सायं घर आना था परन्तु वे लगभग 8 बजे सायं तक नहीं लौटे। घर में परिवार के सभी सदस्य निश्चिन्त हो गये कि अब वे आज घर नहीं लौटेंगे। चूंकि अब आने का समय भी नहीं था। भाई ने प्रस्ताव के अनुसार सायंकाल को भोजन हलुवा का हुआ। सर्वसम्मति से प्रस्ताव के अनुसार माँ ने हलुवा तैयार किया और हम भाई बहिन तथा माँ हलुवा खाने बैठे। माँ ने हलुवा परोसा और हम सबने घपा-घप हलुवा खाना शुरु किया। खान समाप्ति पर था कि बाहर से एक आहट हुई, इम सब तुरन्त समझ गये कि पिता जी आ गये। माँ तथा भाई ने पिता जी ने के डर से मुझसे घपाघप खाने का संकेत किया और पिता जी को हलुवा खाया मत कहना कहा गया। मेरे हाथ में हलुवा का एक गोला रह गया था, जिससे मैं खेल रहा था। उनके इशारे के मुताबिक मैंने उसे अपने गोद में छिपा लिया था। उन दिनों किरोसियन की कमी रहती थी छिलका जलाया करते थे। पिता जी के लिये ज्या बनाया गया। साथ ही खाने के लिये खाना बनाया जा रहा था। हम लोग दो मंजिले मकान में रहते थे। रात में आग जलाया जाता था। उनके खाते समय एकाएक छिलका बुझ गया, उसी वक्त मेरे हाथ का हलुवे का गोला भी उनकी ओर लुढ़क गया। मैं चिल्लाया- मेरे परसाद का गोला। माँ-भाई को जोर की हँसी आ गयी। वे अपनी हँसी रोक नहीं सके और बाहर की ओर चले गये परन्तु मैं मूर्ख बार-बार परसाद का गोला चिल्ला रहा हूँ। पिता जी ने माँ-भाई को डांटा- क्यों पागलों सी हँस रहे हो परन्तु उनको भी उस परसाद के रहस्य का पता न चल सका और न ही उन्होंने जानने का प्रयास किया। यह रहस्य उनके लिए रहस्य ही रह गया।

जमरानी बांध ही हल्द्वानी पेयजल का विकल्प

पि०हि०प्रतिनिधि

हल्द्वानी। जमरानी बांध निर्माण संघर्ष समिति के संयोजक नवीन चन्द्र वर्मा ने कहा है कि सन 1975 से आज तक जनप्रतिनिधियों की दृढ़ संकल्पता की कमी और जमरानी बांध को चुनावी मुद्दा बनाए जाने के कारण ही यह परियोजना आज तक शुरू नहीं हो पाई है । 48 वर्षों में हल्द्वानी की आबादी का ग्राफ गुणात्मक आधार से बढ़ गया है। जब सन् 1975 में परियोजना की आधारशिला रखी गई थी तब हल्द्वानी की आबादी 35-40 हजार थी जो आज 5 लाख को पार कर चुकी है ऐसे में पेयजल आपूर्ति ही प्रमुख मुद्दा बनकर रह गया है। तत्कालीन केन्द्रीय सिंचाई मंत्री के.एल. राव जो उस समय शीर्ष बांध विशेषज्ञों में माने जाते थे तथा के. सी. पन्त जी ने इस परियोजना का स्थलीय निरीक्षण कर इसे मंजूरी दी थी लेकिन कतिपय कारणों से इतने लम्बे अन्तराल तक यह केवल राजनीतिक मुद्दा सा बन कर रह गया है। हल्द्वानी महानगर का दुर्भाग्य है कि यहाँ पेयजल पुनर्गठन हेतु कोई ठोस कार्य योजना रखने वाला अभियन्ता हमें नहीं मिल पाया, आज तक जल निगम द्वारा वर्तमान आबादी को देखते हुए कोई डीपीआर प्रदेश सरकार को भेजी है यह दिखाई नहीं दे रहा है। हमें पेयजल के लिए 10 लाख की आबादी को फीड करने की योजना बनानी चाहिए। ज्ञातव्य है कि गोला नदी का पानी दिन प्रतिदिन कम होता जा रहा है जिसके लिए पर्यावरणीय बदलाव से सूखते जल स्रोत प्रमुख कारण हैं ऐसे में हमें बरसात के पानी को एकत्र कर उसको उपयोग में लाए जाने के लिए बांध बनाने की नितान्त आवश्यकता है जमरानी बांध पर किसी प्रकार की राजनीति न करते हुए से यथाशीघ्र बनाए जाने की मांग करते हुए जमरानी बांध संघर्ष समिति के एन. सी. तिवारी, मोहन सिंह बोरा, रामसिंह बसेड़ा, लक्ष्मण सिंह रजवार, गोविन्द बिष्ट, हेमन्त पाठक ने मांग की है कि हल्द्वानी पेयजल की व्यवस्था हेतु जमरानी बांध बनाए जाने को एकमात्र विकल्प माना जाना चाहिए और उसका इसका यथाशीघ्र निर्माण किया जाना चाहिए। समिति ने वर्तमान सांसद एवं केन्द्रीय राज्य मंत्री अजय भट्ट के प्रयासों की सराहना की है।

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

जौनसार चालदा महाराज की यात्रा में झूमा

उत्तरकाशी। 24 वर्ष में पूरा होने वाला चालदा महाराज के प्रवास व यात्रा का चक्र इस बार चला और पूरा जौनसार झूम उठा। मूलत: कश्मीर से हनोल की महासू महाराज की प्रवास यात्रा का एक लम्बा क्रम यह है। हनोल में प्रकटीकरण के पश्चात बोटा महाराज हनोल में ही विराजित रहते हैं। चालदा महाराज जौनसार बाबर, उत्तरकाशी एवं हिमांचल प्रदेश में प्रवास करते हैं।

बताते चलें कि यह यात्रा 23 नवम्बर 2021 को मोहन से समाल्टा के लिये शुरू हुई थी। 17 माह 4 दिन तक समाल्टा में रहने के पश्चात 29 अप्रैल 2023 को नरण्य के लिये प्रस्तान किया। यहाँ से 1 मई को फिर दासो पहुँची यह यात्रा। दो साल तक यहीं प्रवास होगा। चालदा महाराज पूरे 12 साल जौनसारी क्षेत्र में रहते हैं और 12 साल हिमाचल व उत्तरकाशी के क्षेत्र में। ब्रिटिश सरकार ने महाराज के प्रवास को दो भागों में बांट दिया था। एक भाग साटी बिल अर्थात जौनसार बाबर एवं आंशिक हिमाचल का क्षेत्र जिसके वजीर बाबर के वासतील गाँव के दीवान सिंह हैं। दूसरा भाग पासी बिल याने उत्तरकाशी जनपद ठडीयार गाँव के जयपाल सिंह हैं। वजीर ही यात्रा की व्यवस्था करते हैं।

छठे अस्कोट-आराकोट अभियान की तैयारी

छठे अस्कोट-आराकोट अभियान की तैयारियां होने लगीहैं। 2024 में अभियान सम्पन्न होगा। 1974 में पहला अभियान पिथौरागढ़ के अस्कोट उत्तरकाशी के आराकोट अभियान आरम्भ हुआ था। यह प्रदेश के बुद्धिजीवियों की बहुचर्चित अध्ययन यात्रा रही है। इसके जरिए उत्तराखण्ड की सामाजिक, आर्थिक, पर्यावरणीय, सांस्कृतिक और राजनीतिक स्थिति व विरासत का अध्ययन किया जाता है और उसमें आए बदलावों को दर्ज किया जाता हौ।

अस्कोट-आराकोट अभियान में आरम्भ से जुड़े इतिहासकार प्रो.शेखर पाठक ने बताया कि 50 साल में हुए तमाम बदलावों (सामाजिक, आर्थिक, पर्यावरणीय, सांस्कृतिक और राजनीतिक, परिस्थिक, मनोवैज्ञानिक और जलवायु बदलाव से जुड़े तमाम आयाम) को समझने और विश्लेषित करने के लिए इसको व्यापक बनाया जाना है। इस अभियान पुराने कार्यक्रम में और क्या नया जोड़ा जा सकता है। किन किन नए मार्गों में यह आयोजन हो सकता है। कुछ नदियों के साथ, कुछ आपदा प्रभावित इलाकों में, कुछ ग्लेशियरों तक और तराई, दून तथा भाबर क्षेत्रों में कैसे यात्रा हो ये आयाम बातचीत में तय होने हैं। इस बार पुराने साथियों के साथ-साथ दस नए साथी इस अभियान में शामिल होने के लिये बहुत उत्साहित हैं। इसके लिये अभी 25 मई को ऑनलाइन बातचीज भी होगी। प्रो. गिरिजा पाण्डे इसका संचालन करेंगे।। अभियान से जुड़े चन्दन डांगी ने बताया कि पहली यात्रा में निर्धारित मार्ग में कई बदलावा हैं। देखना होगा कि सड़क मार्ग पर पैदल चलना कितना व्यवहारिक होगा, क्या मार्ग बदलाव होना चाहिये और नई पीढ़ी के यात्रियों को अभियान समझने के लिये मीडिया से अवगत कराना होगा।

नैनीसैनी में उड़ान का वास्ता देकर तोड़फोड़

पिथौरागढ़। नैनीसैनी एयरपोर्ट से विमानों की उड़ान में बाधक बन रहे मकानों को भारी पुलिस बल की ताकत के साथ तोड़ दिया गया। ध्वस्तीकरण की कार्रवाई में लगे अधिकारियों ने उड़ान का वास्ता देकर आदेश के पालन की बात कही।

क्षेत्र में तोड़े गये स्कूल भवन और अन्य भवनों पर एसडीएम सदर अनुराग आर्य ने कहा कि अभी एयरपोर्ट संचालन में बाधक बने 5 मकानों को तोड़ा गया है। इसके लिये सर्वे किया गया था। तोड़े गये माँ नैनावती पब्लिक स्कूल के पढ़ने वाले 164 बच्चों को प्रवेश दिलाने में शिक्षा विभाग ने हर सम्भव मदद की बात कही हे। डीईओ माध्यमिक हवलदार प्रसाद ने बताया कि स्कूल में नर्सरी से दसवीं तक अध्ययनरत 164 बच्चों को शिक्षा विभाग क्षेत्र के निकटवर्ती विद्यालयों में प्रवेश दिलाने में हरसम्भव मदद देगा। जिला प्रशासन की ओर से कहा गया है कि इन बच्चों को प्रवेश दिलाने के लिये मानस एकेडमी और महर्षि स्कूल के प्रबन्धन से वार्ता की गई है। यह स्कूल एक-दो किमी के दायरे में हैं और अभिभावक अपने बच्चों का प्रवेश करवाते हैं तो इनसे प्रवेश शुल्क नहीं लिया जायेगा।

इससे पहले नैनीसैनी क्षेत्र में प्रशासनिक कार्रवाई का विरोध हुआ और धरना प्रदर्शन कर रहे लोगों को समझाया गया। प्रदर्शनकारियों ने कहा कि बिना व्यवस्थापन के मकान तोड़ना गलत है।

जागेश्वर से होगी मानसखंड सर्किट की शुरुआत

काशीपुर। मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने कहा कि केदारखण्ड के साथ ही मानस खण्ड सर्किट बनाने का काम चल रहा है। जिसकी शुरुआत जागेश्वर धाम से होगी। मानसखण्ड की यात्रा चारधाम की तरह ही होगी। उन्होंने कहा कि मन्दिर माला योजना में यहाँ के देवालयों का कायाकल्प होने वाला है। सड़क व संचार सुविधा से पूरे सर्किट को जोड़ने के अलावा इनकी साज-सज्जा का नये सिरे से काम हो रहा है। जिससे स्थानीय लोगों को रोजगार के अवसर भी मिलेंगे और पर्यटक श्रद्धालु लगातार आएंगे। सीएम ने कहा कि हम अपने आने वाला कल कैसा चाहते हैं, इसके लिये आज से काम करना होगा। नई शिक्षा नीति इस दिशा में मील का पत्थर साबित होगी। इसके लिये जहाँ रोजगार के अवसर सृजित होंगे वहीं युवा सिर्फ किताबी ज्ञान तक सीमित नहीं रहेगा। इसके लिये कौशल विकास योजना भी शुरु होगी। मुख्यमंत्री पुष्कर धामी ने कहा कि समान नागरिकता संहिता बनाए जाने पर तेजी से कार्य हो रहा है। जून तक इसका ड्राफ्ट तैयार हो जाएगा। उत्तराखण्ड इस कानून को लागू करने वाला देश का पहला प्रदेश होगा। उन्होंने उम्मीद जताई कि देश के अन्य राज्य भी इस दिशा में आए आएंगे।

बागनाथ, बैजनाथ, पातालभुवनेश्वर, हाटकालिका, देवीधुरा, नैनादेवी, बालासुंदरी नये रूप में दिखेंगे

बागेश्वर। मन्दिर माला योजना के तहत बागेश्वर के बैजनाथ मन्दिर में कंसलटेंसी प्राइवेट लि. की टीम जुट चुकी है। बताया जा रहा है कि बागेश्वर के बागनाथ, बैजनाथ, पिथौरागढ़ के पाताल भुवनेश्वर, हाट कालिका, चम्पावत के देवीधुरा, पाताल रुद्रेश्वर, बालेश्वर, नैनीताल के नैना देवी, कैंचीधाम, उधमसिंह नगर जिले में काशीपुर को चैती माँ बालासुन्दरी मन्दिरों का कायाकल्प होगा।

उत्तराखण्ड सरकार ने दिल्ली की फॉर कंसलटेंट-प्राइवेट लिमिटेड को इन मन्दिरों के कायाकल्प का के लिये योजना बनाने का कार्य दिया है। कम्पनी इन सभी मन्दिरों का सर्वे कर चुकी है। कम्पनी के प्रोजेक्ट इंजीनियर कैलाश अमोली और आर्किटेक्ट रूपेन्द्र कपरवाण ने बागनाथ और गरुड़ के बैजनाथ मन्दिर भी पहुँचे। प्रोजेक्ट इंजीनियर कैलाश आमोली ने बताया है कि सर्वे टीम कुमाऊँ के चयनित मन्दिरों की समिति, पर्यटन विभाग से सलाह लेकर श्रद्धालुओं की सुविधाओं को देखते हुए कार्ययोजना तैयार कर रही है।

लोक गायिका वीना तिवारी को लोक प्रकृति सम्मान

हल्द्वानी। सुप्रसिद्ध लोक गायिका वीना तिवाड़ी को लोक प्रकृति संस्था द्वारा लोक प्रकृति सम्मान से अलंकृत किया गया। संस्था के अध्यक्ष डा. दीपक मेहता ने बताया कि वीना तिवाड़ी को यह सम्मान बग्वालीपोखर के एक कार्यक्रम में देना था किन्तु अपरिहार्य कारणों से उन्होंने यह सम्मान अपने आवास पर ही गृहण करने की इच्छा व्यक्त की। डा. दीपक मेहता एवं संस्था के सदस्यों ने वीना तिवाड़ी के आवास जाकर उन्हें यह सम्मान प्रदान किया।

सम्मान समारोह के इस संक्षिप्त कार्यक्रम में माया मेहरा ने वीना तिवाड़ी को शाल ओढ़ा कर सांस्कृतिक परम्पराओं का निर्वहन किया। इसके बाद संस्था के अधयक्ष डा. मेहता ने सम्मान पत्र और अर्जुन मेहरा ने स्मृति चिन्ह देकर उन्हें सम्मानित किया। वीना तिवाड़ी आकाशवाणी की एक प्रतिष्ठित कलाकार रही हैं। उन्होंने झन दिया बौज्यू छाना बिलौर, ओ परूवा बौज्यू चप्पल के ल्याछा यास, बाट लागी बारात चेली बैठ डोली मा, फूल बुराँशी को कुमकुम मारो इत्यादि लोकप्रिय गीत गाकर उन्हें अमर बना दिया। करीब 73 वर्ष की उम्र में वह आज भी वह सोशल मीडिया में काफी सक्रिय रहती हैं। डॉ. मेहता ने बताया कि वीना तिवाड़ी के अमूल्य योगदान को देखते हुए उन्हें संस्था ने यह सम्मान दिया है। इस अवसर पर त्रिभुवन बिष्ट, आनन्द बोरा, हेम पन्त, दयाल पाण्डे, एस.डी. साहिल आदि लोग उपस्थित रहे। वीना तिवाड़ी ने इस सम्मान के लिए लोक प्रकृति संस्था का आभार व्यक्त किया।

परिक्रमा

ज्यूरस गोल्फ कप में मृणाल विजेता

नैनीताल। राजभवन के गोल्फ मैदान में ज्यूरिस गोल्फ कप प्रतियोगिता में मृणाल भारती विजेता और राहुल कृष्णन उप विजेता रहे। राज्यपाल गुरमीत सिंह ने प्रतियोगिता का टीऑफ किया। साथ ही विजेताओं को पुरस्कार वितरित किये।

नाराज पार्षद ने इस्तीफा दिया

हल्द्वानी। नगर निगम के वार्ड नं. 10 की पार्षद अनुराधा नेगी ने निगम की कार्य प्रणाली पर सवाल उठाते हुए इस्तीफा दे दिया। आरोप लगाया है कि निगम कर्मचारियों की ओर से अभद्र भाषा का प्रयोग और सफाई व्यवस्था पर ध्यान नहीं दिया जा रहा है। स्ट्रीट लाइटें खराब हैं इस ओर भी कोई ध्यान नहीं है।

पौड़ी में बनेगा पहला पर्वतीय संग्रहालय

देहरादून। उत्तराखण्ड से राज्यसभा सांसद अनिल बलूनी की पहल पर पौड़ी में पहला संयुक्त पर्वतीय संग्रहालय और तारामण्डल बनेगा। इसके लिये करीब 30 करोड़ की लागत आएगी, जिसे बलूनी सांसद निधि और अन्य संस्थाओं की मदद से जुटायेंगे। सीएम धामी ने भी इसमें यथासम्भव सहयोग को कहा है।

बेरीनाग जाम से बेहाल

बेरीनाग। बाईपास रोड बनने के बाद भी बेरीनाग में जाम से बेहाल बना हुआ है। मुख्य बाजार में बार-बार लगने वाले जाम से स्थानीय लोग व पर्यटक परेशानी का सामना कर रहे हैं। जाम का मुख्य कारण सड़क किनारे आड़े-तिरसे खड़े कर दिये गये वाहन हैं। जाम का यही हाल गणाई में भी है। टैक्सी चालकों की मनमर्जी जाम का मुख्य कारण है।

वन रैंक वन पेंशन की विसंगति दूर हो

बनबसा। पूर्व सैनिकों ने वन रैंक वन पेंशन के द्वितीय संशोधन के लिए सांसद प्रतिनिधि संजय जोशी के माध्यम से राष्ट्रपति एवं प्रधानमंत्री को ज्ञापन भेजा। इसकी प्रति रक्षा मंत्री व सांसद को भी भेजी है। गौरव कल्याण समिति के अध्यक्ष भानी चन्द के नेतृत्व में ज्ञापन प्रेषित करते हुए कहा कि सरकार पूर्व सैनिकों के हित में विसंगति दूर करे।

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

उत्तराखण्ड शासन

देवभूमि उत्तराखण्ड

G20 भारत 2023 INDIA

आज़ादी का अमृत महोत्सव

चारधाम यात्रा में

पधारने वाले सभी श्रद्धालुओं का हार्दिक स्वागत एवं अभिनन्दन

"चारधाम यात्रा के दौरान देवभूमि आने वाले श्रद्धालुओं खास तौर पर बुजुर्गों, महिलाओं एवं बच्चों की सुविधा के दृष्टिगत सरकार द्वारा आवश्यक प्रबंध किए गए हैं। हमारी सरकार आपकी यात्रा को सुखद, सुगम और पर्यटक के अनुभव को यादगार बनाने के लिए पूर्णतः प्रतिबद्ध है।"

पुष्कर सिंह धामी
मुख्यमंत्री, उत्तराखण्ड

"21वीं सदी के विकसित भारत के निर्माण के दो प्रमुख स्तंभ हैं। पहला अपनी विरासत पर गर्व और दूसरा विकास के लिए हर संभव प्रयास करना। आज उत्तराखण्ड, इन दोनों ही स्तंभों को मजबूत कर रहा है। ये दशक उत्तराखण्ड का दशक होगा।"

नरेन्द्र मोदी
प्रधानमंत्री

महत्वपूर्ण सूचना

- पंजीकरण करते हुए कृपया सही मोबाइल नंबर प्रदान करें
- सभी तीर्थयात्रियों से अनुरोध है कि यात्रा शुरु करने से पहले अपनी चिकित्सकीय जांच कराएं
- क्षेत्र और जलवायु के साथ खुद को ढालने के लिए अपनी यात्रा की योजना बनाएं
- greencard.uk.gov.in पर अपने वाहन का रजिस्ट्रेशन करवाएं

पंजीकरण के लिए

registrationandtouristcare.uk.gov.in

+91-8394833833
(Type 'yatra' on WhatsApp)

Toll Free number 0135 1364

Download the App:
touristcareuttarakhand

पंच केदार — केदारनाथ | तुंगनाथ | रुद्रनाथ | मध्यमहेश्वर | कल्पेश्वर

पंच बद्री — बद्रीनाथ/विशाल बद्री | योगध्यान बद्री | भविष्य बद्री | वृद्ध बद्री | आदि बद्री

पंच प्रयाग — विष्णुप्रयाग | नंदप्रयाग | कर्णप्रयाग | रुद्रप्रयाग | देवप्रयाग

मानसखण्ड मंदिर माला मिशन

मुख्यमंत्री, श्री पुष्कर सिंह धामी के नेतृत्व में चारधाम की तर्ज पर मानसखण्ड मंदिर माला मिशन के प्रथम चरण में कुमाऊं के 16 मंदिरों को विश्वस्तरीय सुविधाओं के साथ विकसित किया जा रहा है।

मानसखण्ड मंदिर माला के अंतर्गत आने वाले प्रथम चरण के पौराणिक मंदिर

जागेश्वर महादेव | चितई गोलज्यू मंदिर | सूर्यदेव मंदिर कटारमल | कसारदेवी मंदिर | नंदा देवी मंदिर | पाताल भुवनेश्वर गंगोलीहाट | हाटकालिका मंदिर गंगोलीहाट | बागनाथ महादेव बागनाथ | बैजनाथ मंदिर | पाताल रुद्रेश्वर गुफा | पूर्णागिरी मंदिर | देवीधुरा | वाराहीदेवी मंदिर | बालेश्वर मंदिर | नैनादेवी मंदिर | कैंची धाम मंदिर | चैती बाल सुंदरी मंदिर

देवभूमि के पवित्र चारधाम यात्रा के दौरान सभी तीर्थयात्रियों से साफ-सफाई का विशेष ध्यान रखने की अपील की जाती है। कचरा केवल कूड़ेदान में डालें। सिंगल यूज़ प्लास्टिक का उपयोग न करें। जिम्मेदार बनें, स्वच्छता बनाए रखने और पर्यावरण के संरक्षण में योगदान दें। सभी तीर्थयात्री और पर्यटक, स्वच्छता के मानदंडों का पालन करें और आस्था को नया आयाम दें।

हेलीकॉप्टर/ अधिक जानकारी और बुकिंग के लिए आधिकारिक वेबसाइट पर जाएं

www.heliyatra.irctc.co.in

आईआरसीटीसी हेल्पलाइन नं० 1800110139
07556698100 | 07554090400

पर्यटक अपने यात्रा व्यय का 5% स्थानीय उत्पादों पर खर्च करें: प्रधानमंत्री

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने आत्मनिर्भर भारत के लक्ष्य को हासिल करने के लिए वोकल फॉर लोकल की बात कही है। स्थानीय उत्पादों को बढ़ावा दिये जाने के उद्देश्य से भारत सरकार द्वारा वन डिस्ट्रिक्ट वन प्रोडक्ट की शुरुआत की गई।

मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी के नेतृत्व में उत्तराखण्ड सरकार ने इस योजना को वन डिस्ट्रिक्ट टू प्रोडक्ट के रूप में आगे बढ़ाया है। बद्रीनाथ धाम के निकट माणा में आयोजित कार्यक्रम में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने देशवासियों से अपील की थी कि कहीं भी घूमने जाएं तो अपने यात्रा व्यय का 5 प्रतिशत स्थानीय उत्पादों पर खर्च करें। इससे स्थानीय

अर्थव्यवस्था में जबरदस्त परिवर्तन देखने को मिलेगा। किसी भी क्षेत्र की पहचान उसकी भाषा बोली एवं स्थानीय उत्पादों से होती है, इनको बढ़ावा देने के लिए हर संभव प्रयास किये जाने चाहिए।

उत्तराखण्ड पर्यटन टोल फ्री नं० : 1364 फोन नं० 0135 3520100

सूचना एवं लोक सम्पर्क विभाग, उत्तराखण्ड द्वारा जनहित में जारी

UttarakhandDIPR

[Print to PDF](http://www.novapdf.com/) without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

ग्रीष्मकालीन पर्यटन, धार्मिक यात्रा सीजन में हार्दिक शुभकामनाएं-

प्रवेश आरम्भ.....

- Smart Digital classrooms.
- Highly Skilled and Dedicated Faculty
- Well Stocked Library with a rich collection of Books, Magazines and Periodicals.
- Well Equipped Science Lab.
- Mathematics Lab.
- Hi-Tech Computer Lab.
- Activity Based Learning.
- Reasonable Fee Structure
- Personalized guidance and Counselling of Students at Various Levels.
- Orientation Programmes for Students.
- Value Education with a motto to provide refined Human Resources.
- Mentor ship at every stage for provide refined Human Resources.
- Mentor Ship at every stage for providing continuous support.
- Intensive Training programmes for improving reading, Writing and Speaking abilities.

के.वी.एम.
हीरानगर , हल्द्वानी

के.वी.एम.
लामाचौड़

K.V.M. PUBLIC SCHOOL

होटल माँ नन्दादेवी एण्ड बारात घर
नानासेम, मुनस्यारी

गणेश सिंह मर्तोलिया एण्ड सन्स
मुनस्यारी

हार्डवेयर, बिल्डिंग मैटीरियल एवं जनरल आर्डर सप्लायर्स
फोन सम्पर्क- 05961-222236
8958525979, 9411134775

Hotel Bala Paradise
Tiksain, Munsiari
Ph. 05961222237, 9412951678

Enjoy Beauty of Himalaya at
MARTOLIA LODGE
Family Guest House- Sarmoly, Munsiyari
A Home Away From Home & Home Stay
Phone: (05961) 222287

धमोत होम स्टे
धरमघर/चकोड़ी
(एडवेंचर जोन, ट्रेकिंग,माउंटेन वाइकिंग, स्थानीय व्यंजन)
मो. 9760007148
www.mountainheights.in

MARTOLIA FURNITURE
A unit of Martolia Enterprises
Pilikothi
Haldwani
Mob- 8057167777, 7906752084, 8650427229

सप्ताह के पर्व

ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष

15 मई- ज्येष्ठ आरम्भ
15 मई- अपरा एकादशी व्रत
19 मई- वटसावित्री व्रत
19 मई- अमावस्या

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक श्रीमती गीता उप्रेती द्वारा पिघलता हिमालय, जे०के०पुरम्, सेक्टर डी, छोटी मुखानी, हल्द्वानी (नैनीताल) उत्तराखण्ड से प्रकाशित एवं शक्ति प्रेस, कालाढूंगी रोड, हल्द्वानी (नैनीताल) से मुद्रित।

सम्पादकः श्रीमती गीता उप्रेती
फोन/फैक्सः (05946) 264013, 9458961490, 9411770280, 9411301014, 9410713075,
editorpighaltahimalay@gmail.com
Website-
www.pighaltahimalay.com
पत्र व्यवहार के लिये पते-
जे0के0पुरम्, सेक्टर डी, छोटी मुखानी, हल्द्वानी (नैनीताल)

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)